17 जून 2023, जून (द्वितीय) • कुल पृष्ठ : 8 • मूल्य : 2/- • वर्ष : 46 • अंक : 6

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

संस्थापक सम्पादक : अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल

सम्पादक : पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल

सह-सम्पादक : पीयूष जैन

55वाँ शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर

आजीवन शुल्क : 251 रुपये

वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

आर. एन. आई. 31109/77

JaipurCity / 224 / 2021-23

गोपाचल की तलहटी ग्वालियर नगरी में आयोजित...

55वाँ प्रशिक्षण शिविर अतिशय सफलता के साथ सम्पन्न

1986 से आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के प्रभावनायोग में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा प्रणीत एवं श्री टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा संचालित 55वाँ वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर ऐतिहासिक नगरी ग्वालियर की पुण्यधरा पर आशातीत सफलताओं के साथ संपन्न हुआ।

ज्ञातव्य है कि डॉ. भारिल्ल ने जैनधर्म व दर्शन के मूल सिद्धांतों को बालकों तक पहुँचाने के लिए पाठ्यक्रम बनाया एवं पाठशाला समिति की स्थापना की तथा उन्हें संचालित करने के लिए अध्यापकों को प्रशिक्षित करने के उद्देश्य का ही परिणाम यह प्रशिक्षण शिविर था। छोटे दादा ने अब तक अपने कार्यक्रमों की गुणवत्ता व आयोजन के स्तर के जो पैमाने स्थापित किए थे उनकी कसौटी पर उनकी अनुपस्थिति में खरा उतरना निश्चित तौर पर टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिए एक बड़ी उपलब्धि है।

इस अभूतपूर्व आयोजन पर देश भर से प्राप्त शुभकामनाओं के कुछ अंश आगामी पृष्ठों पर और शेष आगामी अंक में...

विभिन्न कार्यक्रम व उपलब्धियाँ : एक नजर में...

- संकल्प दिवस पर डॉ. भारिल्ल की साहित्य-साधना का दिव्यदर्शन
- विद्वत संगोष्ठी में किया डॉ. भारिल्ल की श्रुतसेवा का मंगल स्मरण
- दादा की विरासत की अक्षुणणता का प्रथम प्रमाण
- जिनधर्म प्रभावक विभूतियों का मरणोपरान्त सम्मान
- 100 से अधिक अध्यापकों व विद्वानों ने किया प्रशिक्षित
- जीवनोपयोगी व भावभासनपरक शिक्षण पद्धति का प्रशिक्षण
- कुशल, जागरूक, मनोवैज्ञानिक, निपुण अध्यापक हुए तैयार
- यहाँ पर प्रशिक्षित अध्यापक करेंगे बालकों को संस्कारित
- गुजराती, मराठी, कन्नड़ व अंग्रेजी भाषा को मिला स्थान
- विगत वर्षों में 11,800 अध्यापक हुए प्रशिक्षित
- श्री कमलचंद जैन, पिडावा के समर्पण व उत्साह का सम्मान
- स्नातकों की प्रतिभा का सम्मान

डॉ. भारिल्ल के साहित्य का दिव्यदर्शन

डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल सभा मण्डप का विहंगम दृश्य

संकल्प दिवस पर सुसज्जित मंच

सम्पादक की कलम से...

त्वदीयं वस्तु भो स्वामिन, तुभ्यमेव समर्पये

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल
महामंत्री – पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर

आज जब सम्पूर्ण आत्मार्थी मुमुक्षुसमाज दिनांक 21 मई 2023 से 7 जून 2023 तक मध्यप्रदेश के ग्वालियर नगर में आयोजित श्री वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर के अतिशय भव्यता और सफलता के साथ सानन्द सम्पन्न होने पर मुग्ध है, जश्न मना रहा है, बधाइयाँ दे रहा है, मुझे दादा की याद आरही है।

दादा स्वयं जो कुछ भी कर पाए, उसका सम्पूर्ण श्रेय पूज्य गुरुदेवश्री को ही दिया करते थे। वे कहते थे कि – ''पूज्य गुरुदेवश्री ने हमें माल भी दिया और मार्केट भी।''

आज मुझे भी यह सत्य स्वीकार करने में गौरव की अनुभूति हो रही है कि आज जो कुछ भी हो रहा है, उसका सम्पूर्ण श्रेय पिछले 88 वर्ष की उस साधना को जाता है जो अपने सम्प्रदाय परिवर्तन के बाद लगभग 45 वर्षों तक पूज्य गुरुदेवश्री ने स्वयं की और उनके पदार्पण के बाद लगभग 43 वर्षों तक (पूज्य गुरुदेवश्री से संपर्क में आने के बाद लगभग 66 वर्ष) आदरणीय दादा ने जिसे जारी रखा।

आज जो कुछ भी हो रहा है वह तो विगत 88 वर्षों की साधना का सुफल है जो हम पा रहे हैं। आज मुझे दादा की वे प्रेरणाएँ अनायास ही याद आरही हैं जो वे अक्सर मुझे दिया करते थे।

वे कहा करते थे – ''परमातम! तुम्हें कुछ नहीं करना है; बस जो चल रहा है वही चलाते रहना है, यदि यही चलता रहा तो तुम्हारी सबसे बड़ी सफलता है।''

दादा के उक्त कथन, कि – ''पूज्य गुरुदेवश्री ने हमें माल भी दिया और मार्केट भी'' में **इतना और जोड़ना चाहता हूँ कि – दादा ने हमें माल दिया, मार्केट दिया और एक विशाल, सक्षम एवं समर्पित मार्केटिंग टीम भी। अब हमें भला करने को शेष ही क्या रहा है?**

आज मात्र भारत में ही नहीं, वरन सम्पूर्ण विश्व में आत्मार्थी मुमुक्षु विद्यमान हैं। सभी जगह अध्यात्म की सूक्ष्म से सूक्ष्म चर्चा होती है। जैनसमाज के घर-घर में जिनवाणी उपलब्ध है। समाज में हजारों की संख्या में जैनदर्शन और अध्यात्म के अधिकारी विद्वान उपलब्ध हैं। अब हमें क्या करना शेष रहा है, मात्र अनुमोदना के सिवा?

हमारे लिए यह परम संतोष और गौरव का विषय है कि हमारे ट्रस्ट के ट्रस्टी-मंडल ने दादा की उक्त प्रेरणा, कि – ''**तुम्हें कुछ नहीं करना है; बस जो चल रहा है वही चलाते रहना है**'' को अपना सूत्र वाक्य बनाकर अपना लिया है और **हम सभी ट्रस्टीगण कृतसंकल्प तथा कटिबद्ध हैं कि दादा द्वारा संचालित सभी उपक्रम निरन्तर जारी रहेंगे।**

आदरणीय दादा के पदार्पण के बाद पंडित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा आयोजित यह पहला बड़ा कार्यक्रम था और सम्पूर्ण समाज की आशंकाग्रस्त उत्सुक निगाहें इसपर केन्द्रीत थीं। अब क्या होगा, कैसा होगा, कैसे होगा जैसे अनेक प्रश्नचिन्ह आत्मार्थियों के मनोमस्तिष्क में हिलोरें ले रहे थे। यह वक्त किसी को कुछ समझाने-बुझाने का या मनाने-जताने का नहीं था। मात्र एक गरिमामय सफल आयोजन ही इन प्रश्नों का जवाब हो सकता था, जो नियत समय पर ही हो सकता था, समय से पूर्व नहीं, तब तक धैर्य धारण करना ही कर्तव्य था।

भवितव्य भला था और ग्वालियर में शिविर का आयोजन आशातीत सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।

मैं समझता हूँ कि अब इस आयोजन के बाद आज सम्पूर्ण आत्मार्थी मुमुक्षुसमाज इस ओर से आश्वस्त है। अब किसी को संदेह का कोई कारण नहीं कि आगे भी सब कुछ पूर्व की भांति नित्य वृद्धिंगत शैली में सफलतापूर्वक चलता रहेगा।

तत्समय की योग्यता के अनुरूप यह कार्यक्रम उत्कृष्टता के साथ सम्पन्न हुआ सो भला हुआ, पर इस एक सफलता पर फूले-फूले फिरना भी योग्य नहीं है। सम्भव है कि यदि तत्समय की योग्यता इसके विपरीत होती तो परिणाम भी विपरीत ही दिखाई देता, पर तब भी इसका मतलब यह समझना भी हमारी भूल ही होती कि तत्त्वप्रभावना का हमारा संकल्प, हमारा विकल्प हमारे प्रयास और योग्यता किसी मायने में कमजोर हैं।

अंततः सबकुछ होनहार के अनुरूप ही होता है। **एक बार की अतिशय सफलता या घोर विफलता संयोगाधीन होने से दोनों ही महत्त्वहीन हैं। महत्त्वपूर्ण है हमारे संकल्प की दृढ़ता और यत्नों की निरंतरता; यदि ऐसा है तो तत्त्वप्रभावना का भविष्य भी उज्जवल है।**

टोडरमल स्मारक ट्रस्ट ने आदरणीय दादा की छत्रछाया में अब तक अपने कार्यक्रमों की गुणवत्ता और आयोजन के स्तर के जो पैमाने स्थापित किये हैं, उनकी कसौटी पर अब उनकी अनुपस्थिति में खरा उतरना निश्चित तौर पर एक बड़ी चुनौती थी। अब एक बार फिर एक नया पैमाना निर्धारित होने जा रहा था, जिस पर हमारे भविष्य को नापा जाने वाला है।

यह तो स्वाभाविक ही है कि वे **दादा जो इन प्रशिक्षण शिविरों की शृंखला के स्वप्नद्रष्टा, वास्तुकार, नियोजक और शिल्पकार रहे, इनके प्राण और केन्द्रबिन्दु रहे** और विगत 55 वर्षों से सतत प्रत्येक शिविर में उपस्थित रहकर अत्यंत सक्रियता पूर्वक उनका कुशल संचालन करते रहे; आज हमारे बीच नहीं हैं, उनकी अनुपस्थिति में भी क्या यह आयोजन वही गरिमा हासिल कर पायेगा, वही ऊँचाइयाँ छू पायेगा; यह एक विकट प्रश्न था।

दादा द्वारा अर्जित ऊँचाइयाँ छू पाना किसके लिए कितना सम्भव है, नहीं जानता; तथापि हमारा प्रगतिशील बने रहना मात्र भी हमारी सफलता होगी।

दादा की छत्रछाया में तैयार हुई युवा और ऊर्जावान स्नातक विद्वानों की एक विशाल टीम द्वारा श्री अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल के निर्देशन में यह सब सहज ही होगया।

ज्ञातव्य है कि ढाईद्वीप पंचकल्याणक के अवसर पर इंदौर में श्री मुकेश जैन और उनके सहयोगियों के आमंत्रण पर स्वयं दादा ने उन्हें इस **शिविर के आयोजन की स्वीकृति प्रदान की थी निश्चित ही उस शिविर में दादा की उपस्थिति उनका विशिष्ट आकर्षण था। विधि की विडंबना है कि दादा हमारे बीच नहीं रहे, फिर भी आयोजकों का संकल्प यथावत बना रहा, यह सचमुच श्लाघनीय और अनुकरणीय है।**

आप सभी को यह जानकार अति प्रसन्नता होगी कि आगामी वर्ष 2024 के शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर हेतु आज हमारे पास एक स्थान से तो यह ओपन ऑफर है कि जब-जब भी संभव हो हमारे यहाँ उक्त शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर का आयोजन अवश्य करें।

उक्त के अतिरिक्त 3 अन्य लोगों ने आगामी शिविर अपने यहाँ आयोजित करने की भावना व्यक्त की है; इसप्रकार इस बात में कोई संदेह नहीं कि यह क्रम सहज ही नियमित तौर पर चलता रहेगा।

इस वर्ष हमने अपने महाविद्यालय में 38 विद्यार्थियों को प्रवेश दिया है। **हमारे ट्रस्ट मंडल की यह भावना है कि यथासंभव शीघ्र इस महाविद्यालय की छात्र संख्या की क्षमता 200 से बढ़ाकर 300 तक कर दी जाये। ट्रस्ट इस दिशा में कार्यरत है और आशा है हम शीघ्र ही इस लक्ष्य को पाने में सफल होंगे।**

हम सभी का यह दृढ विश्वास है कि आत्मकल्याण हेतु स्वाध्याय के बाद अपनी शेष ऊर्जा और समय का सबसे अच्छा सदुपयोग यही है कि इस भवतापहारी जिनअध्यात्म के प्रचार-प्रसार में जुटे रहें।

अत: शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर की सफलता अपनी समस्त उपलब्धियों सहित आपके चरणों में समर्पित है। तथास्तु!

आध्यात्मिकक्रांति का प्रतीक प्रशिक्षण शिविर

– अजित जैन 'अचल', ग्वालियर
महामंत्री : आयोजक समिति

अपनेआप में अनूठा, पूरे वर्ष में मात्र एक बार लगने वाला यह शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर गोपाचल पार्श्वनाथ की महिमा से मंडित ऐतिहासिक नगरी ग्वालियर में अपनी ख्याति के अनुरूप ही संपन्न हुआ।

आयोजन समिति का उत्साह धर्म प्रभावना के रंग में रंगा हुआ था। कुशल निर्देशन टोडरमल स्मारक की अनुभव संपन्न विश्वस्त टीम का रहा और इस ज्ञानगंगा में संपूर्ण भारतवर्ष से आए प्रशिक्षणार्थियों एवं शिविरार्थियों के साथ ही स्थानीय धर्मपिपासुओं ने स्नानकर अपने संतप्त मानस को शांत किया। ऐसे आयोजन पंचमकाल के प्रभाव को निष्प्रभावी करके, उसे आध्यात्मिकक्रांति का काल बना देते हैं।

सहसम्पादक की कलम से...

अविस्मरणीय आयोजन

– पीयूष शास्त्री, जयपुर

55वें प्रशिक्षण शिविर का सफलतम आयोजन कर ग्वालियर की मुमुक्षुसमाज ने अपने गौरवमयी इतिहास में एक और चमकता सितारा जोड़ लिया।

भरी गर्मी में 18 दिवसीय प्रशिक्षण शिविर ग्वालियर में हो सकता है इसको शिविर रथ के प्रमुख सारथी श्री मुकेशजी ने जिस आन, बान और शान के साथ संभव कर दिखाया, उसके लिए उनका जितना आभार किया जाए कम है। यह उनकी ही संकल्पशक्ति का कमाल है कि यह शिविर ग्वालियर में हो सका।

मुकेशजी की टीम के प्रत्येक साथी ने उनके संकल्प को सफल करने में अपने सुख-दुख, हैरानी-परेशानी भूलकर जिस समर्पण और निष्ठा से रात-दिन अथक परिश्रम किया, उसके आगे हम नतमस्तक है। धन्यवाद और आभार उसके लिए बहुत छोटे शब्द है।

दादा की अनुपस्थिति में हुए इस शिविर को पूरा देश संशय और आशापूर्ण दृष्टि से देख रहा था। इस कठिन परीक्षा में सभी कार्यकर्त्ता, दानदाता, अध्यापक और विद्वानों ने अपनी एक जुटता से सफलता प्राप्त की, इसका बहुत संतोष है।

परमात्मप्रकाशजी के नेतृत्व में स्मारक के ट्रस्ट मंडल ने इस शिविर में वही कर्मठता और जिम्मेदारी दिखाई है, जिसकी अपेक्षा समाज दादा के जाने के बाद हमसे कर रहा था।

गोदिकाजी की अप्रत्याशित उपस्थिति ने इस बात को और पक्का कर दिया कि दादा द्वारा रोपे गए इस बटवृक्ष की जड़ें पर्याप्त मजबूत है।

पूरे चंबल संभाग में इस आयोजन से तत्त्वप्रचार की गतिविधियों को बल मिलेगा। कुछ नई पाठशालाएँ और स्वाध्याय सभाएँ शुरू होंगी, ऐसी उम्मीद है।

स्व-पर के कल्याण में निमित्त तत्त्वज्ञान को समर्पित ऐसे और भी अनेक उपक्रम आगामी समयों में ग्वालियर मण्डल द्वारा और भी अधिक जोश व उत्साह से किये जावेंगे, यही मंगल कामना है।

ज्ञानयज्ञ : शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर

– पण्डित सुनील शास्त्री, ग्वालियर
स्वागताध्यक्ष : आयोजक समिति

गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के प्रभावनायोग में पण्डित टोडरमल स्मारक के कुशल निर्देशन में गोपाचल की महिमा से मंडित ग्वालियर की घरा पर प्रथम बार 18 दिवसीय 55वाँ श्री वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर रूपी ज्ञानयज्ञ बड़े ही धूमधाम से सम्पन्न हुआ। हमने अपने जीवन में इतना विशाल आयोजन तीन-तीन पंच कल्याणों के बराबर देखा और ख़ूब तत्त्व का लाभ लिया। 18 दिन कब बीत गये पता ही नहीं चला.....

प्रशिक्षण शिविर, ग्वालियर : मेरी नजर में

– अध्यात्मप्रकाश भारिल्ल, मुम्बई

आदरणीय डॉ. भारिल्ल के अवसान के पश्चात् पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट का प्रथम मेगा प्रोजेक्ट अठारह दिवसीय 55वाँ ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण शिविर, ग्वालियर; जितनी शंकाओं-आशंकाओं के साथ आरम्भ हुआ, उतना ही सर्वशंका निवारक साबित हुआ। इसका श्रेय डॉ. भारिल्ल द्वारा स्थापित उच्च मानदंड एवं उनकी तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार के लिए समर्पित टीम को जाता है।

इस युग में तीर्थंकर महावीर द्वारा प्रतिपादित प्राचीन जैनदर्शन के सिद्धांतों पर अडिग रहते हुए, उनके प्रतिपादन हेतु वर्तमान युग की आवश्यकता के अनुसार नये साधनों की शोध-खोज व उनका सफल व्यवहारिक प्रयोग कर पाना वस्तुतः एक बड़ी उपलब्धि है। क्योंकि इसके साथ हमारे आगे के विकास की रूपरेखा व गति का बहुत सीधा सम्बन्ध है। हमारे नीतिनिर्धारक अब अधिक आत्मविश्वास के साथ इस तरह के प्रस्तावों पर न केवल अपनी सहमती की मुहर लगाने में रुचि लेंगे; अपितु जमीनी कार्यकर्ताओं का उत्साहवर्धन भी कर सकेंगे।

यदि जनसामन्य की प्रतिक्रियाओं और अनुभूतियों का गहराई से अवलोकन किया जाए, तो आप पायेंगे कि इस शिविर की उपलब्धियों में शिविर के कर्ताधर्ताओं की हर ओर गंभीर व नियमित उपस्थिति व नियंत्रण को सराहा गया है। तो दूसरी ओर वस्तुस्वातंत्र्य के सिद्धांत का उभरकर आते हुए (पोंळीशलश्रश) प्रतिपादन को अच्छा प्रतिसाद मिला। वहीं तीसरी ओर जैनशिक्षा के क्षेत्र में भावभासन परक एवं जीवनोपयोगी प्रतिपादन व मूल्यांकन पद्धितिओं के प्रयोग पर भी बहुत उत्साहवर्धक प्रतिक्रियायें प्राप्त हुई।

मेरा दृढ़ विश्वास है कि इस शिविर की सफलता के साथ-साथ तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार को नए आयाम प्राप्त होंगे और एक नए युग की शुरूआत की ओर हम बहुत तेजी से बढ़ रहे हैं जहाँ निज आत्मा को हाथ पर रखे आंवले के समान दिखाने में हम सफल होंगे।

यह ज्ञानयज्ञ जनसामान्य के आनंद का सबब बने, इसी भावना व आशा के साथ आप-हम सभी को इसकी सफलता के लिए बहुत-बहुत बधाई व साधुवाद के साथ विराम लेता हूँ।

इस शिविर पर सारे देश की नज़रें थीं

– पण्डित अभयकुमार शास्त्री, देवलाली

इस शिविर के आयोजन की ओर सारे देश की नजरें थी; क्योंकि पूज्य दादा की अनुपस्थिति में यह पहला शिविर था। यह हम सबके लिए परीक्षा की घड़ी थी, दादा की अनुपस्थिति के बिना ही उन्हीं की रीति-नीति के अनुसार यह शिविर आयोजित होना था। **जैसा कि सब लोगों ने अनुभव किया कि उन्होंने जिन लोगों पर जिम्मेदारी छोड़ी है, उन सब लोगों ने अत्यंत उत्साह से, ऊर्जा से, समर्पण से, एकाग्र चित्त से इस महान आयोजन इस शिविर को सार्थक व सफल बनाया।**

मुझे भी तत्त्वचिन्तन के माध्यम से तत्त्वज्ञान को समाज तक पहुँचाने का निर्देश दिया गया, यथासंभव मैंने पूरा प्रयास किया। मूल छंदों में जो भाव है उन्हीं को और अधिक गहराई और व्यापक रूप से ग्रंथांतरों, आगम के आधार से एवं आगम के संदर्भ से उन्हें स्पष्ट किया जाए, इसका मेरा भरपूर प्रयास रहा अन्य साथियों ने जिसको जो कक्षा दी, जिसको जो भी कार्य सौंपा गया सभी ने पूरी जिम्मेदारी से निर्वाह किया।

शिविरों के संचालन मैं श्री कमलचंदजी का जो अदम्य उत्साह और ऊर्जा जैसी पहली थी, उससे भी कहीं ज्यादा जिम्मेदारी महसूस करते हुए उन्होंने अपने कर्त्तव्य का निर्वाह किया।

अन्य व्यवस्थाओं में भाई परमात्मजी और भाई अध्यात्मजी के सहयोग से भाई पीयूषजी ने भी इसमें अपना अमूल्य योगदान दिया।

मुझे आशा है कि अन्य कौनसे कार्यक्रम को कैसी मुख्यता देना है, इसमें और अधिक परिमार्जित चिंतन करते हुए हम सभी लोग इस पर विचार करेंगे और शिविर को और अधिक सक्षम बनाने का पूरा-पूरा प्रयास करेंगे। जैसे शिविर का नाम वीतराग-विज्ञान का शिक्षण-प्रशिक्षण एवं शिक्षक का प्रशिक्षण उसी के अनुरूप सारे कार्यक्रम होंगे, अभी भी हुए है; लेकिन और अधिक शुद्धता की गुंजाइश है, जिसे पूरा बनाने का प्रयास करेंगे।

यह ज्ञानयज्ञ टोडरमल स्मारक के माध्यम से अधिक से अधिक व्यापक हो, गहरा हो और सार्थक हो एवं अध्यात्मरस से भरपूर हो ऐसी शुभकामनाएँ व्यक्त करता हूँ।

परमात्मजी-अध्यात्मजी के नेतृत्व का अभिनंदन

– डॉ. अशोक जैन गोयल, दिल्ली

ग्वालियर प्रशिक्षण शिविर में आप दोनों भाईयों की असाधारण और अद्भुत प्रतिभा दिखाई दी, संपूर्ण मुमुक्षुसमाज को अत्यंत प्रसन्नता हुई। सहोदर भाईयों ने जिस मनोयोग और समर्पण भाव से शिविर की गतिविधियों को संचालित किया, वह बेमिसाल है। दादा ने असली और जीवंत प्रभावना की क्रांति की थी, जो उनके बिना भी अच्छी तरह से संचालित हो रही है। दोनों भाईयों ने मिलकर शिविर में अपना 100 प्रतिशत योगदान दिया है। सभी को साथ लेकर नये-नये विचारों और तरीकों को प्रयोग में लाकर शिविर को बहुत ऊँचाई तक ले गये। सभी की अतुलनीय सहभागिता रही। सबका साथ, सबका विकास और सबका प्रयास शिविर की सफलता के लिए जरूरी था। यह सफलता संपूर्ण स्मारक परिवार और स्थानीय मुमुक्षुसमाज ग्वालियर के बिना संभव नहीं थी।

आपकी रीति-नीति के अनुसार ही चलते रहेंगे

– डॉ. शान्तिकुमार पाटील, जयपुर

स्वयं मार्ग बनाना अत्यंत कठिन होता है; परंतु बने बनाए मार्ग पर चलना बहुत ही सरल होता है।

जैनधर्म व जैनदर्शन के मूल सिद्धांतों का जो आध्यात्मिक दृष्टिकोण पूज्य गुरुदेवश्री ने प्रस्तुत किया है, उसे छोटे बालकों तक पहुँचाने के लिए सरलतम पाठ्यक्रम बनाया, उनकी परीक्षा हेतु परीक्षा बोर्ड एवं पाठशाला समिति की स्थापना की व पाठशाला में पढ़ाने वाले अध्यापकों के लिए प्रशिक्षण शिविर प्रारंभ किए।

जो कार्य सरकार पहले 1 वर्ष में करती थी, जो अब दो वर्ष का कार्यकाल हुआ है, ऐसे अध्यापन वी.एड. कार्य को मात्र 18 दिन में अभ्यास सहित संपन्न कराने की जो व्यवस्थित विधि दादा बना कर गए हैं, हमें तो मात्र उसे संचालित करना है। इसलिए उनके बने बनाए मार्ग पर हम सरलता से, उन्हीं की रीति-नीति अनुसार चलते हुए निश्चित रूप से सफलता तक पहुँचेंगे। यदि इसी तरह हम उनकी बनाई गई रीति-नीति अनुसार ही चलते रहेंगे, तो निश्चित रूप से भविष्य में भी गतिविधि इसी प्रकार निर्बाध रूप से चलती रहेगी, इसमें किसी प्रकार का कोई संदेह नहीं है।

अपार से भी पार सफलता

– पण्डित अरुण शास्त्री, जयपुर

किसी भी कार्य की सफलता उसमें शामिल संख्या के आधार पर नहीं होती है, न ही सम्मिलित लोगों की संख्या के आधार पर आंकनी चाहिए; बल्कि उसकी गुणवत्ता की दृष्टि से आंकनी चाहिए।

आदरणीय छोटे दादा को समर्पित 55वें शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर की सफलता अनेक दृष्टियों से आशातीत रही है। यह पाठशाला के बालकों का शिविर नहीं था; बल्कि पाठशाला में अध्ययन कराने वाले अध्यापकों के प्रशिक्षण का शिविर था।

शिविर शब्द भी यही बताता है कि शिव अर्थात् कल्याण, आत्मकल्याण तथा इर अर्थात् प्रेरणा देने वाला अर्थात् जो आत्मकल्याण की प्रेरणा देता है, वह शिविर ही सच्चा शिविर है। इस मायने में भी यह शिविर सफल रहा है। वैसे शिविर था अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए; लेकिन मैंने देखा कि अध्यापकों का प्रशिक्षण एक तरफ चलता था और दूसरी तरफ पूजन, प्रवचन, विधान के माध्यम से ज्ञानगंगा बहती थी। न केवल पाठशाला में अध्यापकों का प्रशिक्षण हो रहा था, बल्कि शिविर में पाठशालायें भी चल रही थीं।

बहुसंख्य विद्वान थे। एक-से-एक श्रेष्ठ, निरभिमानी, निर्लोभी विद्वान थे। अपने लौकिक कार्यों का मोह त्यागकर तत्त्वप्रचार-प्रसार की भावनाओं से भरे हुए विद्वानों का एक समर्थ झुण्ड मैंने वहाँ देखा। यह वह समूह है, जो मूल मोक्षमार्ग की पालकी अपने कंधे पर रखकर, उसे पंचमकाल के अंत तक वहन करेगा।

ऐतिहासिक व गौरवमयी शिविर

– पण्डित कमलचन्द जैन, पिड़ावा

विगत 1969 से लेकर आज तक विभिन्न गतिविधियों सहित सफलतापूर्वक संपन्न होने वाला 55वाँ शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर का विशाल आयोजन हुआ। इन शिविरों के माध्यम से परीक्षाबोर्ड का पाठ्यक्रम बालबोध पाठमाला भाग 1,2,3, वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग 1,2,3 तथा तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग 1,2 का शिक्षण कराया जाता है और शिक्षकों को विशेष शिक्षण पद्धति के माध्यम से प्रशिक्षित किया जाता है। **इन शिविरों के माध्यम से अभी तक 11,800 अध्यापक प्रशिक्षित हो चुके हैं। इस बार शिविर में देश के कोने-कोने से आए हुए गुजराती, मराठी, कन्नड़ आदि 600 छात्रों को 50 उच्चकोटि के अध्यापकों द्वारा प्रशिक्षित किया गया। साथ ही जैनदर्शन के उच्चकोटि के विद्वानों द्वारा प्रवचन-कक्षाओं के माध्यम से जिज्ञासु धार्मिकजनों को लाभान्वित किया गया।**

अंत में लिखते हुए मैं गौरव का अनुभव कर रहा हूँ कि यह शिविर बहुत ही सुंदर व व्यवस्थितरूप से संपन्न हुआ जो कि ग्वालियर शहर में प्रथम बार हुआ। यह एक ऐतिहासिक व गौरवमय शिविर हुआ।

दादा के हाथों से धर्मध्वज मिला

– पण्डित शुद्धात्म शास्त्री, ग्वालियर
मंत्री : आयोजन समिति

ढाईद्वीप पंचकल्याणक का वह दिन आज भी मानस पटल पर अंकित है। जब छोटे दादा ने ग्वालियर में प्रशिक्षण शिविर की अनुमति के रूप में प्रशिक्षण शिविर की धर्मध्वजा अपने हाथ से दी थी। उसी दिन से दादा के ग्वालियर आने की खुशी में शिविर को सफल बनाने का उत्साह दश गुना हो गया था। तदुपरांत डॉ. संजीव गोधा और छोटे दादा के महाप्रयाण से हृदय स्तब्ध हो गया।

फिर मन में विचार आया कि स्नातक होने के नाते दादा के न होने पर आयोजन को सफल बनाने की जिम्मेदारी और ज्यादा बढ़ जाती है। पुनः मन में एक नये प्रवाह का संचार हुआ और मन में दृढ़ निश्चय किया कि शिविर में समिति की ओर से आगन्तुक अतिथिगण व विद्वानों को कोई असुविधा नहीं होने देंगे। अन्ततोगत्वा यह शिविर ग्वालियर में सभी के सहयोग से शान्तिपूर्ण ढंग से सम्पन्न हुआ।

दादा सर्वत्र विद्यमान थे

– राजकुमार शास्त्री, उदयपुर

.....जो साधर्मी लगभग हर वर्ष शिविर में आया करते थे, उनकी आँखें दादा को अवश्य खोजा करती थीं; परन्तु वे इन चर्म चक्षुओं से न दिखते हुए भी सर्वत्र विद्यमान थे। साथ ही मंडप के चारों ओर उनके चित्र सहित सद्वाक्यों का अवलोकन कर भी उनकी उपस्थिति का आभास होता रहता था।.....

शिविर ने नए-नए कीर्तिमान स्थापित किए

– राहुल गंगवाल, जयपुर

..... हमने हमारे परिवार के साथ घर पर बैठकर ऑनलाइन शिक्षण–प्रशिक्षण शिविर का लाभ प्राप्त किया। हमें विद्वानों और खासकर सुमतप्रकाशजी के प्रवचनों का साक्षात् लाभ नहीं मिल पाने के दुख को कम करने का एक जरिया मिल गया। शिविर में **तीनों समय अध्यात्म की गंगा का प्रवाहित होना और खासकर पाठशालाओं के संचालन के लिए छात्र विद्वान तैयार होना वास्तव में अभूतपूर्व और अविस्मरणीय कार्य है। दादा के जाने पर भी दादा के कार्यों को टोडरमल स्मारक ट्रस्ट उसी रीति–नीति के अनुसार कुशलता और समर्पणता के साथ संचालित कर रहा है, यह देख कर मन में बहुत प्रसन्नता हुई और इस बात का संतोष भी मिला कि दादा द्वारा बताई गई चिंतनधारा इसी तरह आगे बढ़ती रहेगी।**

सभी स्थानीय संयोजकों को इस सफलतम कार्यक्रम की बहुत–बहुत बधाई संप्रेषित करता हूँ कि उन्होंने 18 **दिवसीय इस महा शिविर को अपने अथक प्रयासों से और सार्थक संकल्पों से न केवल परिपूर्ण किया; अपितु नए–नए कीर्तिमान स्थापित किए है।**

शिविर में दोनों पक्षों का कमाल

–प्रो. डॉ. संजय शास्त्री, दौसा

ग्वालियर शिविर में मेरा प्रवास लगभग 5 दिन रहा। शिविर के मोटे–मोटे दो पक्ष थे, एक आयोजकों का और दूसरा प्रशिक्षकों का। **आयोजकों के द्वारा संपूर्ण शिविर की जितनी शानदार व्यवस्था की वह आश्चर्य पैदा करती है फिर चाहे आवास हो, भोजन हो या कार्यक्रम स्थल, व्यवस्थाएँ चाक–चौबंद और परिपूर्ण थी।**

दूसरे पक्ष की यदि बात करें तो वह पक्ष भी पूरी तरह से मुस्तैद था और प्रथम पक्ष को लगभग टक्कर देता हुआ। इस पक्ष में सबसे ज्यादा खुशी प्रदान करने वाले क्षण वे थे, जिनमें **प्रशिक्षक पक्ष यह सिद्ध करने पर तुला था कि दादा कहीं नहीं गए और हमारे बीच में मौजूद हैं।** बहुत अच्छे समन्वय के साथ सारी व्यवस्थाएँ हो रही थीं।

सबसे ज्यादा मुझे परमात्म भाईसाहब के व्यक्तित्व ने प्रभावित किया, जिसतरह से पूरी जिम्मेदारी को अपने कंधे पर लेकर अथक प्रयत्न के साथ एक जमीनी कार्यकर्ता के रूप में जैसा मैंने उन्हें देखा, उनसे मेरी अपेक्षाएँ बहुत अधिक बढ़ गई हैं। वे हर समय और हर कार्यक्रम में निरंतर अपनी उपस्थिति दर्ज कर रहे थे और यह बात मुझे कहीं भीतर आशाओं से भर रही थी बाकी लोग फिर चाहे पीयूष हों या अन्य लोग उन्हें देखने के बाद उनकी कार्यशैली के देखने के बाद लगा यह भी उसी तरह से अनथक थे।

आज मेरा मन भीतर से यह आवाज दे रहा है कि इस आयोजन के छोटे से छोटे कार्यकर्ता से लेकर सभी को जिनकी भी इस ज्ञानयज्ञ में आहुति रही है, उन सभी को धन्यवाद, साधुवाद और बधाई दूँ।

पण्डित का पुत्र भी पण्डित होता है

– रमेश जैन, लवाण

ग्वालियर में आयोजित शिक्षण–प्रशिक्षण शिविर एकदम अद्भुत हुआ, जिसका कोई जवाब ही नहीं है। मैंने अपने जीवन में कई शिविर देख पर उन सभी में यह अद्वितीय ही था।

एक बात और मेरे उपयोग में आई है कि तीर्थंकर का पुत्र तीर्थंकर नहीं होता और चक्रवर्ती का पुत्र चक्रवर्ती नहीं होता; पर पण्डित का पुत्र पण्डित हो सकता है, यह बात टोडरमलजी के पुत्र गुमानीरामजी ने सिद्ध कर ही दी थी।

जब मैंने दादा के दोनों पुत्र परमात्मप्रकाशजी व अध्यात्मप्रकाशजी को कक्षा लेते देखा तो मैं दंग रह गया। वे दोनों बच्चों के मनोविज्ञान में इतनी गहराई से उतर गए। उन्होंने इतनी अच्छी–अच्छी बातें समझाईं, यह देखकर मैं आश्चर्य में पड़ गया।

कैसा यह अद्भुत शिविर और कैसा यह आपका समर्पण? गजब... गजब... गजब...

ग्वालियर के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों से अंकित होगा

– रोहित जैन (फालके बाजार)
मंत्री : प्रशिक्षण समिति

55वाँ श्री वीतराग–विज्ञान शिक्षण–प्रशिक्षण शिविर ग्वालियर शहर के लिए वरदान साबित हुआ। आज तक इतने सारे उच्च कोटि के विद्वान एक साथ ग्वालियर के एक पंडाल में पहली बार एकत्रित हुए।

गुरुदेवश्री के प्रभावना योग में आदरणीय छोटे दादा ने जो ज्ञान की धारा प्रभावित की थी। वह अविरलरूप से बहती हुई ग्वालियर आ पहुँची। श्री परमात्मप्रकाशजी एवं श्री आध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल के कुशल नेतृत्व और श्री पीयूषजी शास्त्री के सहयोग से यह शिविर ग्वालियर के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में अंकित हो गया है।

हम श्री टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के ऋणी हैं कि उन्होंने ग्वालियर मुमुक्षुसमाज को यह अवसर प्रदान किया।

महत्त्वपूर्ण, कठिन और चुनौतियुक्त व्यस्थाएँ

– अजित जैन एम. श्री,
अजित जैन जनकगंज, अजय जैन,
मोहन जैन, अमित जैन एवं समस्त भोजनशाला समिति

55वाँ आध्यात्मिक शिविर के शुरुवात के दिनों में मुझे एवं मेरे साथियों को ऐसा लगा कि यह काम 18 दिनों तक कैसे सफल कर सकेंगे। कार्य कठिन अवश्य था, पर असम्भव नहीं। धीरे–धीरे समय बीतता गया। सफलता हाथ लगती गयी। बीच में आने वाली अकल्पनीय कठिनाइयों से उत्साह मंद हुआ, पर टीम के सभी कार्यकर्त्ता खासतौर पर पीयूषजी उत्साह वर्धन करते रहे, जिससे भोजनशाला के संचालन जैसा महत्त्वपूर्ण, कठिन और चुनौतीयुक्त हमारा यह काम भी सानन्द सम्पन्न हो पाया।

बहुत सुन्दर, बहुत सुखद

– मुकेश जैन, ग्वालियर

यह शिविर गोपाचल की धरा पर भगवान महावीर के संदेशों को जीवन में अपनाएंगे, भेदज्ञान की ज्योति जलाकर महावीर बन जायेंगे की गूंज से शुरू हुआ।

समाज ने उदारभाव से धनराशि देकर जो विश्वास दिखाया, उससे शिविर के कार्य उतनी ही भव्यता पूर्वक करने का उल्लास आया। महसूस हुआ कि किसी भी अच्छे कार्य की घोषणा के करने की देर है। समाज तन–मन–धन से उसे पूरा करने में लग जाता है।

वीतराग–विज्ञान का घर–घर कैसे प्रचार करें। जैनसमाज को कैसे नए ढंग से शिक्षित किया जाये और पाठशाला कैसे चलाई जाये यह जानने को मिला।

भरत का अंतर्द्वंद्व नृत्य–नाटिका देख कर बार–बार छोटे दादा स्मृति में आये। ब्र. सुमतप्रकाशजी के प्रवचन से अत्याधिक लाभ प्राप्त हुआ। सभी कार्य सहजता, प्रसन्न मन एवं भाव–विभोरता से सम्पन्न हुऐ।

गम्भीरता से प्रशिक्षणार्थियों को देर रात तक पढ़ते हुऐ देखकर मन प्रफुलित हुआ। जब 417 परिक्षार्थीयों ने शिक्षक बनने की परीक्षा दी, उसमें मेरी पुत्रवधु एवं अन्य ग्वालियर वालों को परीक्षा देते देखा तो लगा कि शिविर कितना आवश्यक है।

बहुत सुन्दर, बहुत सुखद विधान, पूजा–पाठ, भक्ति, विद्वानों द्वारा इतने मार्मिक प्रवचन इस प्रकार यह शिक्षण–प्रशिक्षण शिविर संपन्न हुआ। हमें पहली वार यह अवसर प्राप्त हुआ। सभी की बहुत बधाई, साधुवाद, धन्यवाद।

शिविर का अनुकरणीय संयोजन

– डॉ. अखिल बंसल, जयपुर

ग्वालियर मध्यप्रदेश की पुण्यधरा पर **पंडित टोडरमल स्मारक द्वारा आयोजित वीतराग–विज्ञान शिक्षण–प्रशिक्षण शिविर का 55वाँ सोपान जिस उत्साह व कर्मठता से संपन्न हुआ, उसकी मिसाल दुर्लभ है।** आदरणीय छोटे दादा डॉ. भारिल्लजी की अनुपस्थिति में होने वाला यह पहला विशाल कार्यक्रम था, जिस पर देशभर की जैनसमाज की निगाहें टिकी थीं। जो हमारे अपने थे वे तो सशंकित थे ही, जिनकी गिद्ध दृष्टि हमेशा मुमुक्षुओं की गतिविधियों पर नुक्ता चीनी के लिए लगी रहती है वे भी देखना चाहते थे कि डॉ. भारिल्ल के बाद अब क्या और कैसे होगा?

मैंने ग्वालियर में तीन दिन रहकर जो अनुभव किया; मैं गर्व से कह सकता हूँ कि आदरणीय डॉ. भारिल्लजी ने जो सीख अपने विद्यार्थियों को दी वह अनुकरणीय व प्रशंसानीय है।

शिविर की आवास व भोजन व्यवस्था अति उत्तम थी, बड़ी संख्या में विद्यार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। भारिल्ल जी के दोनों सुपुत्र जी जान से शिविर की व्यवस्थाओं में लगे हुए थे। सभी का सहयोग और अति उत्साह ने शिविर की गौरव गरिमा में चांद चार चांद लगा दिए। कहीं कोई अभाव भासित ही नहीं हुआ। **दादा की सीख से जो चल रहा है वह इसी प्रकार चलता रहे इसी में हमारी सफलता है। निश्चित ही शिविर का संयोजन जिस ढंग से हुआ वह अनुकरणीय है।** स्थानीय कार्यकर्ताओं का समर्पण देखते ही बनता था, जिन्होंने भी प्रशिक्षण प्राप्त किया वह इनका हो गया, इसमें संदेह नहीं।

संयम की साधना, सिद्धों की अराधना, निजात्मा की प्रभावना के कारणभूत पर्वाधिराज दशलक्षण महापर्व
दिनांक – मंगलवार, 19 अगस्त, 2023 से गुरूवार, 28 सितम्बर, 2023 तक सम्पन्न होंगे

दशलक्षण पर्व में प्रवचनार्थ स्वीकृति भेजें

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर के तत्त्वावधान में दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रवचनार्थ जाने वाले सभी विद्वानों, विदुषियों से अनुरोध है कि वे इस वर्ष भी दशलक्षण महापर्व में प्रभावनार्थ जाने हेतु अपनी स्वीकृति शीघ्र प्रदान करें।

आप अपनी स्वीकृति जयपुर कार्यालय में पत्र, फोन, ई–मेल, व्हाट्सएप आदि किसी भी माध्यम से भेजे सकते हैं। यद्यपि सभी विद्वानों को दशलक्षण पर्व व्यवस्था विभाग, जयपुर द्वारा अनुरोध पत्र भेजे जा चुके हैं; परन्तु यदि डाक की गड़बड़ी से पत्र समय पर प्राप्त न हुए हो तो आप स्वयमेव ही अपनी स्वीकृति अतिशीघ्र हम तक पहुँचाने का कष्ट करें।

दशलक्षण महापर्व हेतु आमंत्रण भेजें

दशलक्षण महापर्व के अवसर पर अपने नगर में विधान, प्रवचनार्थ विद्वानों को बुलाने हेतु पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर को आमंत्रण–पत्र समाज, मंदिर, संस्था के लेटरहेड पर शीघ्र भेजें; ताकि समय रहते विद्वान की उचित व्यवस्था की जा सके। पत्र में पूर्ण पता लिखें – नाम, स्थान, मोबाइल एवं तत्काल सम्पर्क की सुविधा हेतु ई–मेल आई.डी. हो तो अवश्य भेज देवें।

अनेक बार समाज द्वारा दशलक्षण पर्व के अवसर पर प्रवचन हेतु विद्वानों को बुलाने का आमंत्रण अन्तिम समय पर प्राप्त होता है, जिससे व्यवस्था करने में कठिनाई होती है; अत: समाज/मंदिर के व्यवस्थापकों से अनुरोध है कि वे आमंत्रण–पत्र भिजवायें।

सम्पर्क सूत्र – दशलक्षण पर्व व्यवस्था विभाग, ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन ए–४, बापूनगर, जयपुर (राज.) 302015
मोबाइल नं. – 9785649333, फोन नं. – 0141–2705581, 2707458, **E-Mail : Ptstjaipur67@gmail.com**

17 जून, 2023, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2021-23

ज्ञान का महायज्ञ

मंच का उद्घाटन

मंचासीन विद्वत्गण

शिविर का उत्साहपूर्ण भव्य शुभारम्भ

विभिन्न प्रतिभाओं से सम्पन्न स्नातक

पुरुष वर्ग

प्रशिक्षण के प्राचार्य का सम्मान

जिनधर्म प्रभावक विभूतियों का मरणोपरान्त सम्मान

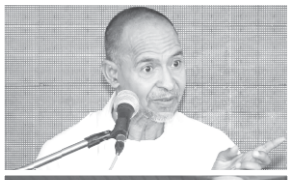

संस्थापक सम्पादक :
अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल

सम्पादक : **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
सह-सम्पादक : **पीयूष जैन**
प्रकाशक व मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458, 7412078704
E-Mail : veetragvigyanjpp@gmail.com

प्रकाशन तिथि : 13 जून 2023

प्रति,